पवित्र बाइबल - ३

पुराना-नियम - २

मनुष्य की उत्पत्ति के बहुत वर्षों बाद अब्राहम के वंशजों (इस्राएलियों) को मिस्र के दासत्व से छुड़ाने में परमेश्वर ने मूसा की सहायता की परन्तु परमेश्वर ने जो देश (कनान) उन्हें देने की प्रतिज्ञा की थी, उसमें पहुँचने से पहले इस्राएली चालीस वर्षों तक जंगल में भटकते रहे। इस दौरान परमेश्वर ने सीने पर्वत पर मूसा और इस्राएलियों से वाचा बाँधी। इस वाचा में वे नियम और निर्देश थे जिन्हें इब्रानी में, तोरह कहते हैं, जैसे वे कैसे एक समाज के रूप में रहें और कैसे यहोवा परमेश्वर की आराधना करें। यदि लोग व्यवस्था का पालन करते और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहते, तो जो प्रतिज्ञाएँ परमेश्वर ने उनके पूर्वज अब्राहम से की थीं वे पूरी होती थीं परन्तु यदि वे आज्ञापालन नहीं करते, तो उन्हें, उनके शत्रुओं द्वारा दण्डित किया जाता था।

पुराने नियम के अधिकांश भाग में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के साथ बाँधी गई वाचा में इस्राएली लोगों को अपने देश में बने रहने में कितना संघर्ष करना पड़ा और जब उन्होंने पाप किया तो कैसे परमेश्वर उनकी अगुवाई की और उन्हें क्षमा किया।

पुराना-नियम विश्वास की एक पुस्तक है, जिसे यहूदी और मसीही दोनों ही पवित्रशास्त्र मानते हैं, जिसमें उनके जीवनों के लिये एक संदेश है। इसका एक पाठ आराधना के समय पढ़ा जाता है। इसके नियम एवं निर्देशों में परमेश्वर की इच्छा प्रकट होती है कि लोगों का व्यवहार पवित्र एवं नैतिक बने। पुराने नियम की घटनाएँ हर मसीही को शिक्षा एवं प्रेरणा देती हैं और बताती हैं कि किस प्रकार यहोवा परमेश्वर उनसे व्यवहार करता है। पुराने नियम के भविष्यद्वाक्ताओं के सन्देश सही जीवन और आराधना की आवश्यकता पर बल देते हैं और एक ऐसे परमेश्वर को प्रगट करते हैं जो दरिद्रों की चिन्ता करता है और जो अनाज्ञाकारी है उन्हें क्षमा करने को तैयार रहता है।

सभी मसीही समुदायों की बाइबल में उनके पुराने नियम में एक समान संख्या में पुस्तकें रही हैं परन्तु सभी इस बात पर सहमत हैं कि पुराना-नियम एक विशेष तरीके से परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के बीच के सम्बन्धों पर विचार करता है और साथ ही यह नये नियम के संदेश को समझने की पृष्ठभूमि प्रदान करता है।